बाईबिल परिचय पुस्तकमाला 01

बाईबिल परिचय

शास्त्री जे सी फिलिप

कार्यवाही सम्पादक डा. सनीश चेरियान

बाइबिल परिचय 01

संशोधित संस्करण

शास्त्री जे सी फिलिप

कार्यवाही संपादक:
शास्त्री सनीश चेरियान
भाषा संपादन:
श्रीमती मोनिका एम स्मिथ

प्रतिलिपि अधिकार: 2022

आनंद भवन प्रकाशन

बाइबिल परिचय

पवित्र बाइबल हर मसीही के लिए एक आदरणीय ग्रंथ है क्योंकि यह परमेश्वर का वचन है।

ऐसा भी समय था जब एक परिवार में एक बाइबल का होना भी बहुत मुश्किल था। बाइबल इतने महंगे हुआ करते थे। लेकिन प्रभु की दया से बीसवीं शताब्दी में बाइबल सोसाइटियों और अन्य संस्थाओं ने बाइबल हर व्यक्ति को बहुत ही सस्ती कीमत पर उपलब्ध करवा दिया है। इतना ही नहीं, दुनिया की लगभग हर मुख्य भाषा में आज सम्पूर्ण बाइबल उपलब्ध है। इसका परिणाम यह हुआ कि आज लगभग हर मसीही परिवार में जितने शिक्षित और साक्षर लोग हैं, उनमें से हर एक के पास कम से कम एक बाइबल है। जिन लोगों की साक्षरता कई भाषाओं में हैं, उन लोगों के पास अक्सर इन सभी भाषाओं में पवित्र बाइबल पाया जाता है।

हर मसीही पवित्र बाइबल का आदर करता है इसलिए कि वो यह जानता है कि यह परमेश्वर का वचन है। परमेश्वर का वचन जो दोधारी तलवार से भी अधिक धारदार है वह हमारे जीवनों की गलतियों को हमारे सामने लाकर पवित्र जीवन

बिताने के लिए हमको प्रेरणा देता है। इस कारण पवित्र बाइबल का नियमित पठन पाठन, अध्ययन मनन हर मसीही के लिए जरूरी है।

हर मसीही के मन में अक्सर यह प्रश्न आता है कि यह महान ग्रंथ किस तरह से हमारे हाथों में पहुंचा। आजकल गैर मसीही लोग भी यही प्रश्न मसीहियों से पूछने लगे हैं।

मसीहियों और गैर मसीहियों के बीच में कुछ इस तरह के नास्तिक लोग भी अब उठ खड़े हुए हैं जो यह प्रश्न बार बार पूछते हैं। वे लोग पवित्र बाइबल के प्रति आदर के कारण नहीं बल्कि अनादर के कारण ये प्रश्न पूछते हैं। जब वे लोग इस तरह के प्रश्न पूछते हैं तब इन विषयों के बारे में और गहरी और अधिक विस्तार से जानकारी चाहना हम सब के लिए स्वाभाविक है। बाइबल-परिचय नाम की जो पुस्तक-परंपरा है उसमें हम पवित्र बाइबल के बारे में और पवित्र बाइबल की 66 पुस्तकों के बारे में आपको परिचय देंगे। यह जो पठन परंपरा है ये कम से कम 60 से 70 पुस्तकों के रूप में हम आप तक पहुंचाएंगे जिसे आप अपने कंप्यूटर पर या मोबाइल पर पढ़ सकते हैं।

यह पुस्तक जिसे आप पढ़ रहे हैं इसके अलावा बाईबिल परिचय पुस्तकमाला की और पुस्तकें आपने नहीं देखी हैं तो इन पुस्तकों के अंत में लिंक दिए हुए हैं जहां से आप ये सारी पुस्तकें डाउनलोड कर सकते हैं। हमारी कोशिश है कि इनको बहुत ही सरल, ललित, भाषा में प्रस्तुत किया जाए। हमारी यह भी कोशिश है कि इन पुस्तकों इस तरह से रूप रेखा दी जाए कि आप अपने मोबाइल पर आराम से इन पुस्तकों को पढ़ सकें।

अब पवित्र बाइबल की तरफ लौटते हैं। हम में से हर व्यक्ति यह जानता है कि यह बहुत प्राचीन पुस्तक है। सवाल यह है कि कितना प्राचीन है और इस प्राचीन काल में किस ने या किन लोगों ने इन पुस्तकों की रचना की। रचना करने के बाद ये पुस्तकें हमारे पास कैसे पहुंची?

तो लीजिए प्रस्तुत है बाइबल परिचय| पवित्र बाइबल में कुल मिलाकर 66 पुस्तकें हैं| उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक 66 पुस्तकें हैं| इन 66 पुस्तकों को लगभग 40 लेखकों ने लिखा है| इन 66 पुस्तकों में सबसे पहली पुस्तक उत्पत्ति आज से करीब साढ़े तीन हजार साल पहले लिखी गई थी| मैं

सिर्फ अनुमान का समय बता रहा हूँ जिसके पीछे एक कारण है| समय के बारे में अज्ञान इसका कारण नहीं है बल्कि मैं इस तरह की तिथियां आपको बता रहा हूँ जिसको आप बड़े आराम से याद रख सके। उत्पत्ति की रचना 1450 ईस्वी पूर्व हुई थी। प्रभु यीशु से 1450 साल पहले। मान के चलिए पंद्रह सौ साल पहले। हम कोई गणित का सवाल तो नहीं कर रहे हैं इसलिए याद रखने के लिए आसान तारीखें मैं आपको बता रहा हूँ।.

प्रभु यीशु से पंद्रह सौ साल पहले का मतलब है आज से साढ़े तीन हजार साल पहले। तो उत्पत्ति की रचना आज से साढ़े तीन हजार साल पहले हुई। निर्गमन, लेव्यवस्था, गिनती, व्यवस्था विवरण और इसके साथ साथ अयूब की पुस्तक की रचना भी लगभग एक ही समय हुई। इन 6 पुस्तकों की रचना प्रभु के महान नायक मूसा ने की थी।

तो बाइबल की जो सबसे पहली पुस्तकें हैं वे आज से साढ़ेतीन हजार साल पहले लिखी गई थी। और बाइबल की आखिरी पुस्तक जो है यूहन्ना का प्रकाशित वाक्य यह ईसवी 70 से पहले लिख दिया गया था। हम कह सकते हैं कि आज से

लगभग लगभग 2000 साल पहले प्रकाशितवाक्य की रचना हुई। तो कुल मिलाकर पवित्र बाईबिल के शुरू की पुस्तकें साढ़े तीन हजार साल और आखिरी पुस्तक की रचना दो हजार साल पहले हुई। कुल मिलाकर कहा जाए तो 66 पुस्तकों की रचना लगभग डेढ़ हजार सालों में हुई और 40 के करीब लेखकों ने इस कार्य को किया। हर मसीही के लिए यह बहुत जरूरी है कि वह इन 66 पुस्तकों के नाम क्रमबद्ध तरीके से याद करे और अपने बच्चों को भी याद दिला दें या याद करवा दें।.

इन 66 पुस्तकों को कई भागों में बांटा जा सकता है जिससे कि हम इन पुस्तकों की विषय वस्तु को आसानी से याद रख सके। सबसे पहले तो पवित्र बाइबल को 2 हिस्सों में बांटा गया है पुराना नियम और नया नियम| सही नाम पुरानी वाचा और नई वाचा होनी चाहिए| मराठी में जो अनुवाद हुआ है उसमें उन्होंने पुरानी वाचा और नई वाचा नाम दिया है| अंग्रेजी में भी पुरानी वाचा और नई वाचा कहा जाता है| हिंदी में पुराना नियम और नया नियम कहा जाता है| गलत नहीं है| लेकिन पुरानी वाचा और नई वाचा कहें तो बेहतर होगा

क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्यों से जो वाचा बांधी है यह उसको प्रदर्शित करता है|

पुराने नियम में 39 पुस्तकें हैं नये नियम में 27 पुस्तकें हैं| इनको किस तरह से विभिन्न भागों में बांटा जाता है वह मैं आपको बताना चाहता हूँ| सबसे पहले उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती और व्यवस्था विवरण की पांच पुस्तकों को अक्सर पांच पुस्तक होने के कारण पंच-ग्रंथ कहा जाता है| इन 5 ग्रंथों में मनुष्य की सृष्टि से लेकर काफी सारी बातें बताई गई हैं जो हम इसी लेखन परंपरा की अगली पुस्तकों में देखेंगे| इसके बाद यहोशू, न्यायियों, रूत, पहला शमुएल, दूसरा शमूएल वहाँ से लेकर एस्तेर की पुस्तक इतिहास की पुस्तकें कहा जाता है| इनमें प्रभु के द्वारा चुनी हुई प्रजा इसराइल का या यहूदियों का इतिहास देखते हैं| इसके बाद अय्यूब, भजन संहिता, नीतिवचन, सभोपदेशक और श्रेष्ठ गीत आते हैं| ये काव्य के रूप में लिखे गए हैं इसलिए इनको काव्य-पुस्तकें कहा जाता है|

काव्य पुस्तकों के बाद बाकी सारी पुस्तकें यशायाह से लेकर मलाकी तक भविष्यवाणियों की पुस्तकें हैं। बहुत ही प्रसिद्ध

भविष्यवक्ताओं के द्वारा ये पुस्तकें लिखी गई थी| इन पुस्तकों को भी दो भागों में बांटा जाता है| यशायह,यिर्मयाह, विलापगीत, यहेजकेल और दानियल को अक्सर बड़े भविष्यवक्ता कहा जाता है| यह उनके बड़े छोटे होने के कारण नहीं है बल्कि यशायाह, यिर्मयाह, यहेजकेल काफी बड़ी पुस्तकें हैं इसलिए यशायाह से लेकर दानियल तक की पुस्तकों को बड़े भविष्यवक्ता कहा जाता है| उसके बाद होशे से लेकर मलाकी तक की पुस्तकों को छोटे भविष्यवक्ता कहा जाता है| यह उनके व्यक्तित्व के छोटे बड़े होने के कारण नहीं है| पुस्तकों के आकार के कारण इनको छोटे भविष्यवक्ता कहा जाता है|

इसके बाद हम आते हैं नए नियम में| नए नियम की शुरू की चार पुस्तकों में प्रभु यीशु की जीवनी को चार लोगों ने लिखा था| चार ऐसे लोग जिन्होंने प्रभु को अपनी आँखों से देखा, अपने कानों से सुना| ये चारों ही प्रभु यीशु की जीवनियां हैं, और इतिहास है| पांचवी पुस्तक को भी इतिहास पुस्तक कहा जाता है| वह है प्रेरितों के कामों का वर्णन| प्रभु यीशु के द्वारा अपनी सेवा के लिये अलग किए हुए जो प्रेरित लोग थे उन लोगों ने प्रारंभिक मंडली में किस तरह से कार्य किया और

पवित्र आत्मा ने प्रारंभिक मंडली में किस तरह से कार्य किया यह पुस्तक इसका एक रिकॉर्ड है। इसके बाद रोमियों से लेकर फिलेमोन तक बड़े बड़े लंबे पत्र हैं। लंबे पत्र होने के कारण इनको अक्सर पत्री कहा जाता है।

रोमियों से लेकर इब्रानियों तक की सारी पत्रियों की रचना प्रभु के महानायक पौलुस ने की थी। इनमें कुछ पत्रियां छोटी हैं रोमियों बहुत बड़ी पत्री है लेकिन इन सभी पत्रियों का इब्रानियों तक की सारी पत्रियों की रचना प्रभु के महानायक पौलुस ने की थी। आजकल हम जिस युग में जी रहे हैं इसको कृपा युग कहा जाता है कृपा युग के महत्वपूर्ण उपदेश इन 14 पत्रियों में मिलता है। सिर्फ 14 में नहीं इसको याद रखें।

इन 14 में मुख्य विषय कृपा युग के उपदेश है लेकिन इसके बाद याकूब से लेकर यहूदा तक जो पुस्तकें हैं ये भी पत्रियां हैं। और ये पत्रियां भी कृपा युग के महत्वपूर्ण उपदेशों के बारे में स्पष्टीकरण देते हैं। तो रोमियों से लेकर यहुदा तक की पत्रियां कृपा युग के उपदेशों को स्पष्ट करते हैं।

इसके बाद आता है आखिरी पुस्तक युहन्ना का प्रकाशित वाक्य। इस में प्रभु ने अपने महान शिष्य यूहन्ना के द्वारा यह

बताया कि भविष्य में क्या होने जा रहा है और किस किस तरह से होने जा रहा है। यह है प्रकाशितवाक्य। तो कुल इस तरह से 66 पुस्तकों से मिलकर पवित्र बाइबिल की रचना हुई है। इन बातों को समझने के लिए प्रभु हम सबकी मदद करें।

अगली पुस्तकों में इन विषयों पर और अधिक प्रकाश डाला जायगा।

यदि यह हमारे द्वारा रची गई पहली पुस्तक है जिसे आप देख रहे हैं। तो इस पुस्तक के अंत में यह जानकारी दी गई है कि बाकी सारी पुस्तकें आप कहां से और कैसे प्राप्त कर सकते हैं। याद रखिये, आपके स्मार्टफोन पर बड़े आराम से डाउनलोड करके आसानी से आप इन पुस्तकों को पढ़ सकते हैं।

इनकी रूप रेखा इस तरह से बनाई गई है और रचना इस तरह से की गई है कि आप इनको आराम से पढ़ सकते हैं। प्रभु आपकी मदद करें। हां एक अनुरोध है। हम लोग स्मार्टफोन आदि पर तमाम तरह का कचरा देखसुन कर दूसरों के साथ शेयर करते हैं। इस तरह से दरअसल उनके जीवन को नुकसान पहुंचाते हैं।

कचरा दूसरों के साथ शेयर करने के बदले ठोस आत्मिक सामग्री उनके साथ बांटे और इसलिए हमारा अनुरोध है कि इस इलेक्ट्रॉनिक पुस्तिका को कम से कम अपने दस मित्रों को जरूर शेयर कर दे। उससे ज्यादा कर सकेंगे तो और भी अच्छा है। अनुग्रह को उस दास के समान जिसने उसको जो सिक्का मिला था उसे गाड़ दिया था। इस तरह से गाड़ कर न रखे प्रभु आपकी मदद कर

प्रतिलिपि अधिकार: 2022

आनंद भवन प्रकाशन